सत्र 2025– 26 में मीडिया एवं जनसंपर्क कमेटी द्वारा विश्वविद्यालयीन गतिविधियों में सहभागिता व विभिन्न मीडिया संस्थानों के लिए न्यूज कवरेज (जुलाई 2025 से अक्टूबर 2025 तक की गतिविधिया)

भारतीय ज्ञान परंपरा एनईपी 2020 की मूल भावना : कुलपति

नवभारत रिपोर्टर। जगदलपुर।

बीते सत्र की विसंगतियों को दूर करने और इस सत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को बेहतर और प्रभावी ढंग से लागू करने के उद्देश्य से बुधवार काकतीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में कार्यशाला का आयोजन किया गया। शमक विवि और पीजी कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस री-ओरिएंटेशन प्रोग्राम में संभाग के विभिन्न महाविद्यालयों के प्राचार्य, एनईपी के नोडल अधिकारी एवं संस्थान के ब्रांड एंबेसडर विद्यार्थी उपस्थित रहे।

कार्यशाला में पद्मश्री हेमचंद मांझी, पद्मश्री अजय मंडावी और छत्तीसगढ़ संस्कृति की ख्यात लेखिका शंकुलता तरार का शाल एवं स्मृति चिह्न के साथ सम्मान भी किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल भावना है। भारतीय ज्ञान परंपरा विज्ञान और अध्यात्म से जुड़ा है। जड़ी बूटी हमारी प्राचीन ज्ञान परंपरा से जुड़े हैं। इसके सहारे हम अपनी प्राचीन चिकित्सा को पुनर्जीवित कर सकते हैं। प्रो श्रीवास्तव ने कहा कि हमें भी अपने विवि और महाविद्यालय में ख्यात विवि की तरह माहौल अच्छा बनाना है। अपने पेडागॉजी को सुधारना है। इनोवेशन, रिसर्च और टेक्नॉलॉजी के अलावा हमें फ्री लीडिंग जर्नल के एक्सेस करने पर जोर देना है, हमें विद्यार्थियों की आवश्यकता और मांग के अनुरूप व्यवस्था बनानी है।

एनईपी की मूल भावना समझना जरूरी : श्रीवास्तव

रिसोर्स पर्सन के रूप में प्रदेश उच्च शिक्षा के एनईपी ओएसडी डॉ डीके श्रीवास्तव ने कहा कि एक दिन और एक सत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को पूर्णरूपेण लागू करना कठिन है पर एक सत्र में सभी के सहयोग से प्रदेश में इस नीति को अधिकतम लागू कर लिया गया है। हम सभी को एनईपी की मूल भावना को दिलो-दिमाग में उतारना है। अपने आभार उद्बोधन में डॉ राजेश लालवानी ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार सत्र को सही समय और तारीख में संचालन करना भी जरूरी है। वर्कशॉप का संचालन चित्रलेखा कोडोपी एवं मेखला चट्टोपाध्याय ने किया।

भाषा के प्रसार से बचेगी संस्कृति

अपने संबोधन में पद्मश्री हेमंचद मांझी ने स्थानीय अपनी बोली में अपने विचार रखे। पद्मश्री अजय मंडावी ने कहा कि आर्टिस्ट हूं पर पूरा काम चैरिटी जैसा ही है। वरिष्ठ लेखिका शकुंतला तरार ने कहा कि हमें अपनी संस्कृति को बचाने की शुरूआत अपनी भाषा बचाने से करनी है। हमें अपनी पुरानी भाषा और बोली का संरक्षण करना चाहिए। दूसरे सत्र में रिसोर्स पर्सन के रूप में उच्च शिक्षा के संयुक्त संचालक जीए घनश्याम ने भी संबोधित किया।

छत्तीसगढ़ की लेखिका शंकुलता तरार को भी सम्मानित किया

शासकीय काकतीय महाविद्यालय में पद्मश्री अजय मंडावी का सम्मान

हरिभूमि न्यूज ▸▸ जगदलपुर

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को बेहतर और प्रभावी ढंग से लागू करने के उद्देश्य से बुधवार काकतीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में कार्यशाला का आयोजन किया गया। शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय और पीजी कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस री ओरिएंटेशन प्रोग्राम में संभाग के विभिन्न महाविद्यालयों के प्राचार्य, एनईपी के नोडल अधिकारी एवं संस्थान के ब्रांड एंबेसडर विद्यार्थी उपस्थित रहे।

■ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को बेहतर और प्रभावी ढंग से लागू करने हुई कार्यशाला

कार्यशाला में पद्मश्री हेमचंद मांझी, पद्मश्री अजय मंडावी और छत्तीसगढ़ संस्कृति की ख्यात लेखिका शंकुलता तरार का शाल एवं स्मृति चिह्न के साथ सम्मान किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल भावना है। भारतीय ज्ञान परंपरा विज्ञान और अध्यात्म से जुड़ा है। जड़ी बूटी हमारी प्राचीन ज्ञान परंपरा से जुड़े हैं। इसके सहारे हम अपनी प्राचीन चिकित्सा को पुनर्जीवित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि हमें भी अपने विवि और महाविद्यालय में ख्यात विवि की तरह माहौल अच्छा बनाना है। अपने पेडागॉजी को सुधारना है। इनोवेशन,रिसर्च और टेक्नालॉजी के अलावा हमें फ्री लीडिंग जर्नल के एक्सेस करने पर जोर देना है। हमें विद्यार्थियों की आवश्यकता और मांग के अनुरूप ▸▸ शेष पेज 12 पर

संस्कृति को बचाने की शुरूआत अपनी भाषा बचाने से करनी है

पद्मश्री हेमचंद मांझी ने स्थानीय अपनी बोली में अपने विचार रखे। पद्मश्री अजय मंडावी ने कहा कि आर्टिस्ट हू पर पूरा काम वैरिटी जैसा ही है। वरिष्ठ लेखिका शकुंतला तरार ने कहा कि हमें अपनी संस्कृति को बचाने की शुरूआत अपनी भाषा बचाने से करनी है। हमें अपनी पुरानी भाषा और बोली का संरक्षण करना चाहिए।

विद्यार्थियों को एनईपी के प्रति रूचि पैदा करनी

दूसरे सत्र में रिसोर्स पर्सन के रूप में उच्च शिक्षा के संयुक्त संचालक जीए घनश्याम ने कहा कि हमें एनईपी के टेक्नलिटी को बेहतर तरीके से विद्यार्थियों तक पहुंचाना है। विद्यार्थियों को एनईपी के प्रति रुचि पैदा करनी है। हमें उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग करना है। आईसीटी को अधिक से इस्तेमाल करने पर जोर देना है।

कार्यशाला • बीयू और पीजी कॉलेज के प्रोग्राम में प्राचार्य, नोडल अधिकारी, ब्रांड एंबेसडर विद्यार्थी सहित अन्य लोग मौजूद रहे

नई शिक्षा नीति की दी जानकारी, पद्मश्री का हुआ सम्मान

भास्कर न्यूज़ | जगदलपुर

बीते सत्र की विसंगतियों को दूर करने और इस सत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को बेहतर और प्रभावी ढंग से लागू करने के उद्देश्य से बुधवार को काकतीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में कार्यशाला का आयोजन किया गया।

बस्तर विश्वविद्यालय और पीजी कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस री ओरिएंटेशन प्रोग्राम में संभाग के विभिन्न महाविद्यालयों के प्राचार्य, एनईपी के नोडल अधिकारी एवं संस्थान के ब्रांड एंबेसडर विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यशाला में पद्मश्री हेमचंद मांझी, पद्मश्री अजय मंडावी और छत्तीसगढ़ संस्कृति की ख्यात लेखिका शकुंतला तरार का शाल एवं स्मृति चिह्न के साथ सम्मान भी किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल भावना है।

जगदलपुर। कार्यशाला में शामिल होते पद्मश्री व अन्य।

भारतीय ज्ञान परंपरा विज्ञान और अध्यात्म से जुड़ा है। जड़ी बूटी हमारी प्राचीन ज्ञान परंपरा से जुड़े हैं। इसके सहारे हम अपनी प्राचीन चिकित्सा को पुनर्जीवित कर सकते हैं। रिसोर्स पर्सन के रूप में प्रदेश उच्च शिक्षा के एनईपी ओएसडी डॉ. डीके श्रीवास्तव ने कहा कि एक दिन और एक सत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को पूर्णरूपेण लागू करना कठिन है पर एक सत्र में सभी के सहयोग से प्रदेश में इस नीति को अधिकतम लागू कर लिया गया है। हम सभी को एनईपी की मूल भावना को दिलो-दिमाग में उतारना है। विवि और महाविद्यालय के नोडल अधिकारी और ब्रांड एंबेसडर के साथ सभी को इस नीति को प्रभावी शकुंतला से इम्प्लीमेंटेशन करने में सहयोग करना होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में पुरानी सभी नीतियों की कमी को पूरा किया गया है।

अपने संबोधन में पद्मश्री हेमंचद मांझी ने स्थानीय अपनी बोली में अपने विचार रखे। पद्मश्री अजय मंडावी ने कहा कि आर्टिस्ट हूं पर पूरा काम चैरिटी जैसा ही है। वरिष्ठ लेखिका शकुंतला तरार ने कहा कि हमें अपनी संस्कृति को बचाने की शुरुआत अपनी भाषा बचाने से करनी है। हमें अपनी पुरानी भाषा और बोली का संरक्षण करना चाहिए। दूसरे सत्र में रिसोर्स पर्सन के रूप में उच्च शिक्षा के संयुक्त संचालक जीए घनश्याम ने कहा कि हमें एनईपी के टेक्नलिटी को बेहतर तरीके से विद्यार्थियों तक पहुंचाना है। विद्यार्थियों को एनईपी के प्रति रूचि पैदा करनी है। हमें उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग करना है। आईसीटी को अधिक से इस्तेमाल करने पर जोर देना है।

विवि के डिप्टी लाईब्रेरियन को मिला आउटस्टैंडिंग लर्नर का अवार्ड

आईआईटी खड़गपुर में एनपीटीईएल द्वारा हुआ सम्मान

जगदलपुर, 25 जुलाई (देशबन्धु)। शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में सेवारत उप ग्रंथपाल डॉ. संजय कुमार डोंगरे को उनके उत्कृष्ट प्रयासों और उपलब्धियों के लिए आउटस्टैंडिंग लर्नर अवार्ड से सम्मानित किया गया है। आईआईटी खड़गपुर के रिसर्च पार्क में रविवार को आयोजित समारोह में एनपीटीईएल द्वारा उन्हें यह सम्मान दिया गया। नेशनल प्रोग्राम ऑन टेक्नोलॉजी एन्हांस्ड लर्निंग (एनपीटीईएल) भारत सरकार का एक वित्त पोषित प्रोग्राम है, जिसे भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (आईआईटी) और भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी) द्वारा संयुक्त रूप से विकसित किया गया है। इसका उद्देश्य इंजीनियरिंग, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन और मानविकी विषयों के लिए ऑनलाइन वेब और वीडियो पाठ्यक्रम प्रदान करके शिक्षा को बढ़ावा देना है। एनपीटीईएल संबंधित विषयों में पाठ्यक्रमों का दुनिया का सबसे बड़ा ऑनलाइन संग्रह है। यह छात्रों और प्रोफेशनल को अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र में आगे बढ़ने में मदद करने के लिए ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

एनपीटीईएल के पाठ्यक्रम सभी के लिए निःशुल्क उपलब्ध हैं और सीखने में रुचि रखने वाला कोई भी व्यक्ति इन पाठ्यक्रमों को कर सकता है। उप ग्रंथपाल एवं लाईब्रेरी एंड इंफोर्मेशन साइंस विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. डोंगरे की इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय परिवार ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दी हैं। कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव एवं कुलसचिव डॉ राजेश लालवानी ने अपने संयुक्त शुभकामना संदेश में कहा कि डॉ. डोंगरे की यह उपलब्धि हम सभी के लिए गर्व का विषय है। यह अवार्ड और उपलब्धि उनके लगन, परिश्रम और ज्ञानार्जन के प्रति समर्पण जैसे व्यक्तिगत प्रयासों का सम्मान है। यह सम्मान विश्वविद्यालय के शैक्षणिक स्तर और मार्गदर्शन की भी पुष्टि करता है। हम सब उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं और आशा करते हैं कि वे इसी प्रकार सफलता के नए आयाम स्थापित करते रहें। डॉ. डोंगरे को इससे पूर्व एनपीटीईएल बिलीवर और एनपीटीईएल इंथुआस्ट के रूप में भी सम्मान मिल चुका है।

जयंती पर विवि ने शहीद महेंद्र कर्मा को किया याद

जगदलपुर, 5 अगस्त (देशबन्धु)। जनजातीय समाज के अधिकारों और सम्मान के लिए जीवन जीने वाले लोकप्रिय जननेता शहीद महेंद्र कर्मा को उनके जयंती पर शहीद महेंद्र कर्मा विवि परिवार ने स्मरण किया। मंगलवार को आयोजित पुष्पांजलि कार्यक्रम में कुलपति प्रो मनोज कुमार श्रीवास्तव के अतिरिक्त विवि के वरिष्ठ अधिकारी, विभिन्न विभागों के प्राध्यापक एवं कर्मचारी उपस्थिति थे।

राष्ट्रीय पर्व

कहा- आज के विश्वविद्यालय प्राचीन गुरुकुल के स्वरूप

बस्तर विवि में मना आजादी का उत्सव, कुलपति ने फहराया तिरंगा

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जगदलपुर . शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में आजादी का 79वां पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। ध्वजारोहण के बाद कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने अपने शुभकामना संदेश में कहा कि हमारे महापुरूषों ने अपार साहस, सर्वस्व त्याग और अहिंसा रूपी हथियारों के बल पर देश को स्वतंत्र कराया। प्रो. श्रीवास्तव ने उपनिषद के दृष्टांतों का जिक्र करते हुए बताया कि आज के विश्वविद्यालय प्राचीन गुरुकुल के ही नए स्वरूप हैं। आज की तरह प्राचीन गुरूकुल में भी अधिक से अधिक विद्यार्थी होने, प्रतिभासम्पन्न विद्यार्थियों के प्रवेश लेने और विभिन्न क्षेत्र के विद्यार्थियों के प्रवेश पाने की अपेक्षा की जाती थी। विद्यार्थियों को अपने चित्त पर नियंत्रित होने की बात कही जाती थी। हमारे प्राचीन ऋषि-मुनि, गुरू और विद्वान कई विषयों के ज्ञाता होते थे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति हमारे डीएनए में है। हमें विश्व गुरू और भारतीय होने के लिए गर्व किए जाने वाले विषयों को जानना चाहिए। इस अवसर पर अपने शुभकामना संदेश में कुलसचिव डॉ. राजेश लालवानी ने कहा कि विद्यार्थियों को विवि रूपी मंच का बेहतर उपयोग करना चाहिए। विद्यार्थी न केवल स्वावलंबी बनें बल्कि वे वैश्विक स्पर्धा के अनुरूप बनने का प्रयास करें। हम सभी को अपना जॉब ड्यूटी की तरह नहीं बल्कि एक कर्तव्य की तरह करना चाहिए। इस अवसर पर विवि के वरिष्ठ प्राध्यापक, अधिकारी-कर्मचारी और विद्यार्थी उपस्थित थे। बीएड सहित अन्य कक्षा के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी।

विवि प्रशासनिक भवन के सामने ध्वजारोहण करते हुए कुलपति प्रो. श्रीवास्तव।

एनआईटी रायपुर और शहीद महेन्द्र कर्मा विवि के बीच हुआ एमओयू

टेक्नोलॉजी के उपयोग में बस्तर के उद्यमियों को मिलेगा सहयोग

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जगदलपुर

बस्तर स्टार्टअप इकोसिस्टम के विकास हेतु प्रदेश के दो शैक्षणिक संस्थानों ने मिलकर कार्य करने की ओर कदम बढ़ाया है। बस्तर क्षेत्र में नवाचार, सह-अभिकेंद्रण तथा उद्यमिता उत्कृष्टता को बढ़ावा देने हेतु राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रायपुर और शहीद महेंद्र विश्वविद्यालय, बस्तर ने समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इसके माध्यम से बस्तर के उद्यमियों और नवाचार कर्ताओं को टेक्नोलॉजी उपयोग करने में सहायता मिलेगी। टेक्नोलॉजी का अधिक से अधिक उपयोग कर व्यवसाय को बढ़ा सकेंगे।

सोमवार को एनआईटी, रायपुर में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रायपुर नवाचार एवं उद्यमिता प्रतिष्ठान और शहीद महेन्द्र कर्मा विश्वविद्यालय-अभिकेंद्रण एवं स्टार्टअप प्रतिष्ठान ने एक रणनीतिक समझौते पर आगे बढ़ने की पहल की। इस महत्वपूर्ण समझौते पर एनआईटी रायपुर के निदेशक प्रो एनवी रमना राव तथा शहीद महेन्द्र कर्मा विश्वविद्यालय, बस्तर के कुलपति प्रो मनोज कुमार श्रीवास्तव ने हस्ताक्षर किए। यह दोनों प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों के मध्य सहयोगात्मक नवाचार के एक नए युग का प्रतीक है। हस्ताक्षर समारोह में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर नवाचार एवं उद्यमिता प्रतिष्ठान के प्रमुख अधिकारी उपस्थित रहे। जिनमें सहायक प्राध्यापक एवं संकाय प्रभारी डॉ अनुज कुमार शुक्ला, तथा सहायक कुलसचिव एवं अधिकारी प्रभारी पवन कटारिया सम्मिलित थे। यह पहल परिवर्तनकारी साझेदारी के प्रति संस्थागत प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

साथ ही छत्तीसगढ़ की उस यात्रा का मील का पत्थर है, जिसके अंतर्गत राज्य तकनीक-संचालित स्टार्टअप एवं नवाचार का अग्रणी केंद्र बनने की दिशा में अग्रसर है। यह समझौता सहयोग का एक व्यापक ढांचा तैयार करता है, जिससे राज्यभर के उद्यमियों, विद्यार्थियों एवं स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र को लाभ मिलेगा। इस अवसर पर निदेशक प्रो. एन. वी. रमना राव ने कहा कि राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर और शहीद महेन्द्र कर्मा विश्वविद्यालय के बीच यह सहयोग स्टार्टअप को समर्थन देने तथा छत्तीसगढ़ में तकनीकी नवाचार को आगे बढ़ाने की हमारी साझा प्रतिबद्धता को प्रकट करता है।

उन्नत संसाधन और समर्पित सहयोग मिल सकेगा

कुलपति प्रो मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि यह समझौता हमारे उस दृष्टिकोण से पूर्णतः मेल खाता है, जिसके तहत हम एक ऐसा सहयोगात्मक कार्यक्षेत्र बनाना चाहते हैं जो बस्तर क्षेत्र के समृद्ध संसाधनों का सदुपयोग करते हुए नवाचार को प्रोत्साहित करे। प्रो श्रीवास्तव ने कहा कि इस साझेदारी से विश्वविद्यालय में उन्नत संसाधन और समर्पित सहयोग मिल सकेगा। व्यवसाय में प्रगति के टेक्नोलॉजी का सही और आवश्यक उपयोग जरूरी है। टेक्नोलॉजी के सहारे क्षेत्रीय उद्यमी बस्तर की विकास संभावनाओं को सफल उद्यमों में बदल सकेंगे। सहायक प्राध्यापक डॉ.अनुज कुमार शुक्ला ने कहा कि यह साझेदारी ऐसे तालमेल स्थापित करेगी,जिससे दोनों संस्थानों के स्टार्टअप को मार्गदर्शन नेटवर्क,साझा अवसंरचना तथा सहयोगात्मक अनुसंधान अवसर उपलब्ध होंगे। यह नवाचारी उद्यमों के विस्तार के लिए आवश्यक हैं।

कार्यशाला • विश्व फोटोग्राफी दिवस बस्तर विश्वविद्यालय में पत्रकारिता-जनसंचार में फोटोग्राफी विषय पर कार्यक्रम हुआ

एक तस्वीर एक हजार शब्द के खबर के बराबर होती है: सुनील

भास्कर न्यूज | जगदलपुर

विश्व फोटोग्राफी दिवस के उपलक्ष्य में गुरुवार को बस्तर विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला में फोटोग्राफी प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। फोटोग्राफी के टेक्निक एवं बस्तर में फोटोग्राफी के महत्वपूर्ण थीम और अवसर विषय पर आयोजित इस प्रशिक्षण में बड़ी संख्या में युवा विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

वरिष्ठ फोटोग्राफर ज्ञान प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि फोटो को पत्रकारिता से अलग नहीं किया जा सकता है। खबर और फोटो एक-दूसरे के पूरक हैं। बिना फोटो के न्यूज अधूरा सा होता है। बिना

जगदलपुर। कार्यशाला में मौजूद बीयू के छात्र। यहां पत्रकारिता में फोटोग्राफी का महत्व समझाया गया।

तस्वीर के समाचार प्रमाणिक नहीं लगते हैं। त्रिपाठी ने कहा कि फोटोग्राफी एक कला है जिसमें हम प्रकाश के सहारे प्रभावी इमेज बना पाते हैं। त्रिपाठी ने बताया सामान्य फोटोग्राफी और फोटो जर्नलिज्म में अंतर है। उन्होंने कहा कि फोटोग्राफी के लिए घुमक्कड़ होना जरूरी है। महंगे कैमरे के बदले जो मोबाइल उपलब्ध है उसी से बेहतर फोटो खींचने का प्रयास करना चाहिए। वरिष्ठ फोटोग्राफर सुनील पांडेय (भोलू पांडेय) ने कहा कि एक तस्वीर अच्छी बड़ी खबर बना देती है। फोटो ही खबर को इम्पैक्ट के लायक बनाते हैं। फोटो अच्छी हो तो वह हजार शब्द का काम करती है। बदलता हुआ बस्तर हम तस्वीरों के माध्यम से दिखा सकते हैं।

फोटो ऐसा हो कि देखकर खबर पढ़ने की इच्छा हो

पांडेय ने कहा कि अखबारों में ऐसे फोटो होने चाहिएं जिसे देखकर न केवल मन प्रसन्न हो बल्कि उस खबर को पढ़ने की इच्छा भी जाग जाय। पांडेय ने बताया कि मोबाइल से अच्छे फोटो खींचे जा सकते हैं। महंगे कैमरे का फीचर्स मोबाइल में मिलने लगे हैं। आज ड्रोन फोटोग्राफी की सबसे अधिक मांग की जा रही है। इससे पहले कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो. शरद नेमा ने कहा कि युवाओं को फोटोग्राफी जैसे स्किल भी सीखना चाहिए। आज इंटरव्यू में पढ़ाई के अलावा अन्य कौशल के बारे में पूछा जाता है। फोटोग्राफी हॉबी के साथ-साथ एक अच्छा कैरियर भी है। अगर फोटोग्राफी के क्षेत्र में जाना चाहते हैं तो आप में धैर्य रखने और सही समय का इंतजार करने की क्षमता होनी चाहिए। कार्यशाला में वरिष्ठ पत्रकार अजय श्रीवास्तव ने भी फोटोग्राफी के दौरान आने वाले परिस्थितियों और प्रभावी फोटो खींचने के टेक्निक बताए। इस अवसर पर पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष डॉ. विनोद कुमार सोनी, डॉ. तेज बहादुर चंद्रा, राजेश्वर प्रसाद, डॉ. प्रज्ञा गुप्ता, डॉ. प्रिंस जैन, डॉ. दुर्गेश डिक्सेना, निरंजन कुमार सहित विभिन्न विभागों के विद्यार्थी उपस्थित थे।

शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में विश्व फोटोग्राफी दिवस मना

फोटो को पत्रकारिता से अलग नहीं किया जा सकता : त्रिपाठी

हरिभूमि न्यूज ⏭ जगदलपुर

विश्व फोटोग्राफी दिवस के उपलक्ष्य में गुरुवार को शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय के पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला में फोटोग्राफी प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। फोटोग्राफी के टेक्निक एवं बस्तर में फोटोग्राफी के महत्वपूर्ण थीम और अवसर विषय पर आयोजित इस प्रशिक्षण में बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया।

वरिष्ठ फोटोग्राफर ज्ञान प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि फोटो को पत्रकारिता से अलग नहीं किया जा सकता है। खबर और फोटो एक-दूसरे के पूरक हैं। बिना फोटो के न्यूज अधूरा सा होता है। बिना तस्वीर के समाचार प्रमाणिक नहीं लगते हैं। त्रिपाठी ने कहा कि फोटोग्राफी एक कला है जिसमें हम प्रकाश के सहारे प्रभावी इमेज बना पाते हैं। उन्होंने बताया सामान्य फोटोग्राफी और फोटो जर्नलिज्म में

फोटोग्राफी हॉबी के साथ एक अच्छा कैरियर

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो. शरद नेमा ने कहा कि युवाओं को फोटोग्राफी जैसे स्किल भी सीखना चाहिए। आज इंटरव्यू में पढ़ाई के अलावा अन्य कौशल के बारे में पूछा जाता है। फोटोग्राफी हॉबी के साथ-साथ एक अच्छा कैरियर भी है। अगर फोटोग्राफी के क्षेत्र में जाना चाहते हैं तो आपमें धैर्य रखने और सही समय का इंतजार करने की क्षमता होनी चाहिए।

अंतर है। प्रेस फोटोग्राफी में केवल सुंदरता न ढूंढे। तस्वीरों से छेड़छाड़ न हो। द्वेषपूर्ण फोटो पत्रकारिता नहीं होनी चाहिए। फोटोग्राफी के लिए घुमक्कड़ होना जरूरी है। महंगे कैमरे के बदले जो मोबाईल उपलब्ध है उसी से बेहतर फोटो खींचने का प्रयास करना चाहिए।

वरिष्ठ फोटोग्राफर सुनील पांडेय ने कहा कि एक तस्वीर अच्छी बड़ी खबर बना देती है। फोटो ही खबर को इम्पैक्ट के लायक बनाते हैं। एक बदलता हुआ बस्तर हम तस्वीरों के माध्यम से दिखा सकते हैं। उन्होंने कहा कि अखबारों में ऐसे फोटो होने चाहिए जिसे देखकर न केवल मन प्रसन्न हो बल्कि उस खबर को पढ़ने की इच्छा भी जाग जाए। मोबाइल से अच्छे फोटो खींचे जा सकते हैं। महंगे कैमरे का फीचर्स मोबाइल में मिलने लगे हैं। आज ड्रोन फोटोग्राफी की सबसे अधिक मांग की जा रही है। जब भी फोटो खींचे तो उसमें एक्शन और इमोशन दिखना चाहिए। फोटो में क्रिएटिविटी भी दिखे। बस्तर संभाग में दशहरा पर्व फोटो के लिए बेहतर अवसर होता है। फ्रांस जैसे देश के लोग बस्तर क्षेत्र की फोटोग्राफी को खूब पसंद करते हैं। युवाओं को जूम कर फोटो खींचने से बचना चाहिए। फोटो यदि दो एमबी ⏭ शेष पेज 10 पर

क्षेत्र की संस्कृति का निचोड़ बस्तर पंडुम में देख सकते हैं : देव

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जगदलपुर

विश्व आदिवासी दिवस के उपलक्ष्य में सोमवार को शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में आदिवासी पंडुम का आयोजन किया गया। जनजातीय संस्कृति की विविधता और विशेषता को प्रस्तुत करने वाले इस विशेष आयोजन में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम रही।

- शमक विवि में आदिवासी पंडुम का हुआ शानदार आयोजन
- जनजातीय पारंपरिक परिधान स्पर्धा की रही धूम

विद्यार्थियों ने न केवल छत्तीसगढ़ की जनजातीय संस्कृति प्रस्तुत किया बल्कि विभिन्न प्रदेशों के आदिवासी संस्कृति के पहनावे को प्रस्तुत किया। आयोजन के समापन सत्र को संबोधित करते हुए विधायक किरण सिंह देव ने कहा कि बस्तर अनूठा क्षेत्र है। यह पवित्र भूमि है। आज बस्तर की चर्चा विदेशों में भी हो रही है। अन्य प्रदेश और देश में बस्तर उत्सुकता का विषय है। सभी लोग बस्तर को जानना समझना चाहते हैं। यहां हर बीस किलोमीटर में सांस्कृतिक विविधता देखने को मिल जाती है। यहां की विशेषताओं को समेट पाना मुश्किल है। उन्होंने कहा कि बस्तर की संस्कृति अदभुत है। हम इसका निचोड़ बस्तर पंडुम में देख सकते हैं। इस बार पांच की जगह सात विधाओं में बस्तर पंडुम का आयोजन होगा। यहां की संस्कृति और परंपरा को यथावत रखते हुए विकास कार्य हो रहा है। युवा पीढ़ी को अपनी भाषा व संस्कृति को साथ लेकर चलना चाहिए।

कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि जनजातीय संस्कृति पुरानी है। इस समाज ने अपनी परंपरा और संस्कृति को अक्षुण्ण रखा है। यह समाज अपनी परंपराओं और विरासत से जुड़ा रहा है। जैव विविधता को संतुलित रखने में जनजातीय समाज का योगदान सबसे अधिक है। प्रकृति से लगाव इस समाज की संस्कृति है। नई पीढ़ी के युवाओं को स्कूली समय से ही जनजातीय संस्कृति की जानकारी मिलनी चाहिए।

स्वागत उद्बोधन में कार्यक्रम समन्वयक डॉ. सुकृता तिर्की ने कहा कि ऐसे आयोजन युवाओं को अपनी संस्कृति के जड़ों से जोड़ता है। छात्र-छात्राएं अपनी संस्कृति की ओर उन्मुख होते हैं। सामाजिक एकता को मजबूत करता है। ऐसे आयोजन अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे युवा पीढ़ी के लिए लाभदायक होगा। ऐसे आयोजन हर शैक्षणिक संस्थान में होना चाहिए। कार्यक्रम में विवि के जनजातीय समाज के प्राध्यापक, अधिकारी-कर्मचारी का भी सम्मान किया गया।

इस अवसर पर क्षेत्र के समाज प्रमुखों में गंगाराम कश्यप, लखेश्वर खुदराम, सामू मौर्य, सोमारू कौशिक, रतन कश्यप, बाबूलाल बघेल, अनंत कश्यप सहित अन्य उपस्थित थे। संचालन बीएड अध्ययनशाला की अतिथि व्याख्याता डॉ. गायत्री सोनी ने किया।

जागरूक करने का सराहनीय आयोजन

आभार उद्बोधन में कुलसचिव राजेश लालवानी ने कहा कि सांस्कृतिक विविधता के प्रति जागरूक करने का यह सराहनीय आयोजन है। सभी प्रतिभागियों की प्रस्तुति विजेता के समान रहा। विद्यार्थी जीत और प्रतिभागिता के प्रति उत्साह बनाए रखें।

बस्तर हाट में पारंपरिक व्यंजनो का स्टॉल

मानव विज्ञान एवं जनजातीय अध्ययनशाला एवं पीएम उषा मेरु कंपोनेंट के तहत आयोजित इस कार्यक्रम में विवि के विभिन्न विभागों के स्टूडेंट्स द्वारा बस्तर हाट में पारंपरिक व्यंजनों और कलाकृतियों के स्टॉल लगाई गई। साथ ही देश भर के जनजातीय बलिदानी नायकों के अतुलनीय योगदानों की भी प्रदर्शनी लगाई गई।

विजेताओं को मिली सराहना और ईनाम

एकल और समूह वर्ग में करीब 50 कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई। सभी नृत्य और गायन पर श्रोताओं ने तालियों के शाबासी दी। जनजातीय परिधान स्पर्धा में प्रतिभागियों ने छत्तीसगढ़ के विभिन्न जनजातीय पहनावे के साथ पूर्वोत्तर भारत और भूटान की संस्कृति को प्रस्तुत किया। जनजातीय नायकों के वेष की प्रस्तुति को सराहना मिली। नृत्य में गंगेश्वरी, अंजू, तामेश्वरी, जनजातीय परिधान स्पर्धा में शुभम देव, अमन, रूखमणि, जलदेव, खुशबू, एकल गायन में अनिता, गौरी, श्वेता, समूह नृत्य में लोकेश्वरी ग्रुप, श्रीतिका ग्रुप, चंद्रिका ग्रुप एवं ग्रुप डांस में अनूपा व यशवंत ग्रुप ने पुरस्कार जीते। स्पर्धा के विजेता प्रतिभागियों को स्मृति चिह्न और प्रमाणपत्र देकर प्रोत्साहित किया गया।

शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय, बस्तर
धरमपुरा - 2, जगदलपुर (छ.ग)

आयोजन : जनजातीय पारंपरिक परिधान स्पर्धा की हुई खूब सराहना

आदिवासी पंडुम का सजा मंच जनजातीय संस्कृति की दिखी आभा

बस्तर विश्वविद्यालय में आदिवासी पंडुम का किया गया आयोजन, छात्रों ने दी मोहक प्रस्तुति

किरण देव बोले- क्षेत्र की संस्कृति का निचोड़ पंडुम

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जगदलपुर. मंच पर सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देते हुए विश्वविद्यालय के छात्र।

जगदलपुर. शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में सोमवार को आदिवासी पंडुम का मंच सजा। इस दौरान बस्तर की जनतातीय संस्कृति की हरित आभा नजर आई। विश्व आदिवासी दिवस के उपलक्ष्य में विवि में यह आयोजन किया गया। जनजातीय संस्कृति की विविधता और विशेषता को प्रस्तुत करने वाले इस विशेष आयोजन में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम रही। विद्यार्थियों ने न केवल छत्तीसगढ़ की जनजातीय संस्कृति प्रस्तुत किया बल्कि भारत के विभिन्न प्रदेशों के आदिवासी संस्कृति के पहनावे को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में विधायक किरण देव और कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव सहित जनजातीय समाज के कई प्रमुख लोग उपस्थित रहे। आयोजन के समापन सत्र को संबोधित करते हुए विधायक किरण देव ने कहा कि बस्तर बहुत अनूठा क्षेत्र है। यह पवित्र भूमि है। आज बस्तर की चर्चा विदेशों में भी हो रही है। अन्य प्रदेश और देश में बस्तर उत्सुकता का विषय है। सभी लोग बस्तर को जानना समझना चाहते हैं। यहां हर बीस किलोमीटर में सांस्कृतिक विविधता देखने को मिल जाती है। यहां की विशेषताओं को समेट पाना मुश्किल है। देव ने कहा कि बस्तर की संस्कृति अदभुत है। हम इसका निचोड़ बस्तर पंडुम में देख सकते हैं। इस बार पांच की जगह सात विधाओं में बस्तर पंडुम का आयोजन होगा। यहां की संस्कृति और परंपरा को यथावत रखते हुए विकास कार्य हो रहा है। युवा पीढ़ी को अपनी भाषा व संस्कृति को साथ लेकर चलना चाहिए। स्वागत उद्बोधन में कार्यक्रम समन्वयक डॉ. सुकृता तिर्की ने कहा कि ऐसे आयोजन युवाओं को अपनी संस्कृति के जड़ों से जोड़ता है। आभार उद्बोधन में कुलसचिव राजेश लालवानी ने कहा कि सांस्कृतिक विविधता के प्रति जागरूक करने का यह बहुत ही सराहनीय आयोजन है।

स्पर्धाओं में यह रहे अव्वल

कार्यक्रम के दौरान नृत्य स्पर्धा में गंगेश्वरी, अंजू, तामेश्वरी, जनजातीय परिधान स्पर्धा में शुभम देव, अमन, रूखमणि, जलदेव, खुशबू, एकल गायन में अनिता, गौरी, श्वेता, समूह नृत्य में लोकेश्वरी गुरप, श्रीतिका गुरप, चंद्रिका गुरप एवं गुरप डांस में अनूपा व यशवंत ग्रुप ने पुरस्कार जीते। कार्यक्रम के अंत में स्पर्धा के विजेता प्रतिभागियों को स्मृति चिह्न और प्रमाणपत्र देकर प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में विवि के जनजातीय समाज के प्राध्यापक, अधिकारी-कर्मचारी का भी सम्मान किया गया। इस अवसर पर क्षेत्र में समाज प्रमुखों में गंगाराम कश्यप, लखेश्वर खुदराम, सामू मौर्य, सोमारू कौशिक, रतन कश्यप, बाबूलाल बघेल, अनंत कश्यप सहित अन्य उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन बीएड अध्ययनशाला की अतिथि व्याख्याता डॉ. गायत्री सोनी ने किया।

जनजातीय समाज ने परंपराओं को रखा जीवंत

कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि जनजातीय संस्कृति बहुत पुरानी है। इस समाज ने अपनी परंपरा और संस्कृति को आज भी जीवंत बनाए रखा है। यह समाज अपनी परंपराओं और विरासत से जुड़ा रहा है। जैव विविधता को संतुलित रखने में जनजातीय समाज का योगदान सबसे अधिक है। प्रकृति से लगाव इस समाज की संस्कृति है। नई पीढ़ी के युवाओं को स्कूली समय से ही जनजातीय संस्कृति की जानकारी मिलनी चाहिए।

जनजातीय नायकों पर आधारित प्रदर्शनी लगाई

मानव विज्ञान एवं जनजातीय अध्ययनशाला एवं पीएम उषा मेरु कंपोनेंट के तहत आयोजित इस कार्यक्रम में स्टूडेंट्स द्वारा बस्तर हाट में पारंपरिक व्यंजनों और कलाकृतियों के स्टॉल लगाया। जनजातीय बलिदानी नायकों के अतुलनीय योगदानों की भी प्रदर्शनी लगाई। एकल और समूह वर्ग ने प्रस्तुति दी। जनजातीय परिधान स्पर्धा में प्रतिभागियों ने छत्तीसगढ़ के विभिन्न जनजातीय पहनावे के साथ पूर्वोत्तर भारत और भूटान देश की संस्कृति को प्रस्तुत किया।

कला में छिपे विज्ञान को भी समझना जरूरी : प्रो. राजीव

विवि को प्रोजेक्ट के लिए मिलेगा पांच करोड़ का फंड

नवभारत रिपोर्टर। जगदलपुर।

शमक विवि के इन्क्यूबेशन एंड स्टार्टअप फाउंडेशन एवं कला अर्चना आर्ट स्टूडियो द्वारा तीन दिवसीय हस्तशिल्प एवं कला मेला 'बस्तर मेरी नजर से' थीम पर दलपत सागर के पास बस्तर आर्ट गैलरी में लगा है, यह मेला शनिवार शाम तक चलेगा। इस आयोजन में युवा कलाकारों ने इनोवेशन, स्टार्टअप एवं उद्यमिता के उद्देश्य से हस्तकला एवं शिल्प से जुड़े प्रोडक्ट के कई आकर्षक स्टॉल भी लगाए हैं। आज शुभारंभ अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि आईआईटी भिलाई के डायरेक्टर प्रो राजीव प्रकाश ने कहा कि हमें भारतीय कला में जो विज्ञान छिपे हैं और उसमें जो मैसेज छिपे हैं उसे समझने का प्रयास करना है।

इस आयोजन में आईआईटी, भिलाई टीम की विशेष उपस्थिति रही। शुक्रवार को शहर के विभिन्न स्कूलों के 400 से अधिक बच्चों ने बस्तर को लेकर अपनी कल्पनाओं और आस-पास देखे प्राकृतिक व दैनिक गतिविधियों को अपने कूचियों, पेंसिलों और स्कैच पेन से कागज पर जीवंत किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि राजीव ने कहा कि बस्तर के कला के क्षेत्र में काम किए जाने की कई संभावनाएं हैं। हमें हर काम को अब नए ढंग से करने की जरूरत है। प्रो राजीव ने कहा कि हमें सस्टेनेबल डेवलपमेंट प्रोसेस को जनजातीय समाज से सीखना चाहिए, ट्राइबल कल्चर ही भारतीय कल्चर है। बस्तर क्षेत्र की तारीफ करते हुए प्रो राजीव ने कहा कि बस्तर सभी को भाने लायक है। उन्होंने कहा कि स्थान के नाम से आईआईटी भिलाई कहा जाता है पर इसे आप आईआईटी छत्तीसगढ़ समझें। यह संस्था सभी क्षेत्र के लिए कार्य करने को संकल्पित है। आईआईटी भिलाई द्वारा बस्तर क्षेत्र में कई प्रोजेक्ट पर काम किया जा रहा है। बस्तर क्षेत्र के युवा आईआईटी भिलाई और शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय से कभी भी जुड़ सकते हैं। इससे पहले प्रो राजीव ने फैकल्टी और विद्यार्थियों से चर्चा करते हुए अच्छे विजन के प्रोजेक्ट के लिए शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय को पांच करोड़ फंडिग उपलब्ध कराने की बात कही।

आज सभी को काम की जरूरत : कुलपति

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि देश में हर वर्ष करीब सवा करोड़ वर्किंग फोर्स जुड़ रहे हैं। सभी को काम की जरूरत है। इसके लिए हमें स्किलफुल यूथ बनाने की जरूरत है। आज टेक्नोलॉजिस्ट भी समाज के प्रति संवेदनशील हुए है। वे टक्नोलॉजी के सहारे समाज को नई राह दिखाने का प्रयास कर रहे हैं। कला अर्चना आर्ट स्टूडियो की प्रमुख तमन्ना जैन ने कहा कि आज आर्ट और स्टार्टअप एक समान हो गए हैं। कई युवा कला से ही जीवन चलाना चाहते हैं। बस्तर में रहने की सुखानुभूति युरोप में रहने से बेहतर है।

आयोजन: तीन दिन से चल रहे मेले का आज बस्तर आर्ट गैलरी में होगा समापन

ट्राइबल कल्चर ही असल भारतीय कल्चर, कला में छिपे विज्ञान को समझें: प्रो. राजीव

शमक विवि के इन्क्यूबेशन-स्टार्टअप फाउंडेशन और अर्चना आर्ट स्टूडियो का हस्तशिल्प एवं कला मेला

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जगदलपुर. भारतीय कला में छिपे विज्ञान और संदेश को समझना जरूरी है। हमें सस्टेनेबल डेवलपमेंट की सीख जनजातीय समाज से लेनी चाहिए। ट्राइबल कल्चर ही असली भारतीय कल्चर है। यह बातें शहीद महेंद्र कर्मा विवि के इन्क्यूबेशन-स्टार्टअप फाउंडेशन और कला अर्चना आर्ट स्टूडियो के हस्तशिल्प एवं कला मेला के शुभारंभ अवसर पर आईआईटी भिलाई के डायरेक्टर प्रो. राजीव प्रकाश ने कही। उन्होंने आगे कहा कि स्थान के नाम से आईआईटी भिलाई कहा जाता है पर इसे आप आईआईटी छत्तीसगढ़ समझें। यह संस्था सभी क्षेत्र के लिए काम करने को संकल्पित है। आईआईटी भिलाई द्वारा बस्तर क्षेत्र में कई प्रोजेक्ट पर काम किया जा रहा है। बस्तर क्षेत्र के युवा आईआईटी भिलाई और शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय से कभी भी जुड़ सकते हैं। प्रो. राजीव ने कहा कि बस्तर के कला क्षेत्र की असीम संभावनाएं हैं। इस दौरान उन्होंने शहीद महेंद्र कर्मा विवि को अच्छे विजन वाले प्रोजेक्ट्स के लिए 5 करोड़ रुपए की फंडिंग देने की घोषणा भी की। तीन दिवसीय हस्तशिल्प एवं कला मेला बस्तर आर्ट गैलरी, दलपत सागर परिसर में जारी है। बस्तर मेरी नजर से थीम पर लगे इस मेले में युवा कलाकारों और स्टार्टअप्स ने हस्तशिल्प व शिल्प से जुड़े उत्पादों के आकर्षक स्टॉल लगाए, जिन्हें लोगों ने खूब सराहा।

इस दौरान कला अर्चना आर्ट स्टूडियो की प्रमुख तमन्ना जैन ने कहा कि आज कला और स्टार्टअप एक-दूसरे के पूरक हो गए हैं। कई युवा कला को ही करियर बना रहे हैं। बस्तर में जीने का सुख यूरोप में रहने से बेहतर है।

जगदलपुर. मेले के शुभारंभ कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भिलाई आईआईटी के डायरेक्टर प्रो. राजीव प्रकाश।

आज उद्यमी सम्मेलन और ओपन माइक के साथ समापन

शनिवार को बस्तर आर्ट गैलरी में सुबह 11 बजे से स्टार्टअप अवसर और चुनौतियां विषय पर उद्यमी सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। इसके अलावा ओपन माइक और पुरस्कार वितरण समारोह के साथ कला मेले का समापन होगा।

तकनीक और समाज का संगम: कुलपति

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि हर साल देश में सवा करोड़ नई वर्किंग फोर्स जुड़ती है, जिन्हें रोजगार दिलाने स्किलफुल यूथ तैयार करना जरूरी है। आज टेक्नोलॉजिस्ट समाज के प्रति संवेदनशील हैं और तकनीक के सहारे नई राह दिखा रहे हैं। तकनीक और समाज का संगम हो रहा है। कुलपति ने कहा कि हम लगातार प्रदेश के बड़े संस्थाओं के साथ एमओयू कर रहे हैं ताकि वहां के विशेषज्ञों का लाभ बस्तर के युवाओं को मिले। आईआईटी भिलाई जैसे प्रतिष्ठित संस्थान से भी अब बस्तर के युवा जुड़ पाएंगे। कुलपति प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि बस्तर के युवाओं में प्रतिभा की कमी नहीं है। बस उन्हें दिशा देने की जरूरत है और इस पर विश्वविद्यालय लगातार काम कर रहा है।

400 से अधिक बच्चों ने दिखाई प्रतिभा

शुक्रवार को शहर के विभिन्न स्कूलों के 400 से अधिक बच्चों ने अंतरविद्यालयीन चित्रकला प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। बच्चों ने बस्तर की प्रकृति, संस्कृति और दैनिक जीवन के दृश्यों को रंगों और रेखाओं के जरिए कैनवास पर उतारा। निर्णायक मंडल में डॉ. शांति, मूवी जैन और गिरीश मौजूद रहे।

प्रेरक **शमक विवि में जियोफिजिक्स विषय पर व्याख्यान आयोजित**

समस्या और समाधान खोजने से बेहतर संभावना को ढूंढें: सिंह

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जगदलपुर. शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में मंगलवार को जियोफिजिक्स एंड पेट्रोफिजिक्स इन मिनरल इक्सपोलरेशन विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया।

जगदलपुर. रिटार्यड चीफ जियोफिजिस्ट अशोक सिंह कार्यक्रम को संबोधित करते हुए।

भौतिकी अध्ययनशाला के इस कार्यक्रम में प्रमुख वक्ता रिटार्यड चीफ जियोफिजिस्ट अशोक सिंह ने कहा कि विद्यार्थी एक विद्यार्थी नहीं होता बल्कि वे भविष्य होते हैं। आप सभी विभिन्न भाषा को सीखें। ह्यूमन हिस्ट्री के लिटलेचर विभिन्न भाषाओं मे हैं। उन्हे जानने समझने के लिए आपको बहुभाषी होना जरूरी है। सिंह ने कहा कि आज कम्प्लीटनेस की कमी है। किसी वर्क को कम्प्लीटनेस से करना जरूरी है। ये कम्प्लीटनेस आपको मल्टीडिसिप्लीनरी ज्ञान से आएगी। सिंह ने मैथेमेटिका ऑप्टिमाईजेशन के साथ धरती के नीचे के हिडन मिनरल क्षेत्र को पहचाने संबंधी कई जानकारी दी। सिंह ने कहा कि समस्या और समाधान खोजने से ज्यादा संभावना क्या है को ढूंढना महत्वपूर्ण है। अपने स्वागत और आभार उद्बोधन में कुलसचिव डॉ. राजेश लालवानी ने कहा कि एनईपी 2020 आने के बाद अब विषयों की सीमा में बंधे रहने की बाध्यता नहीं है। सफलता से पहले कई असफलता हाथ लगती है पर इसे सकारात्मक तरीके से लें। कार्यक्रम का संचालन वर्षा पांडे और चंचल वर्मा ने किया। कार्यक्रम में डॉ समीर ठाकुर, अमितांशु शेखर झा, डॉ स्वप्ना गुप्ता, संजय कुमार पांडेय, डॉ. प्रिंस जैन, डॉ. कृष्णकुमार वर्मा, देवेंद्र यादव, सेमंत बघेल सहित अन्य उपस्थित थे।

केवल एक ही मानसिक दायरे में ना रहें: कुलपति

कुलपति प्रो मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि मल्टीडिसिप्लीनरी में टीचिंग और रिसर्च इंटेशन दोनों शामिल हैं। प्रो. श्रीवास्तव ने साइलोस का मायने समझाते हुए कहा कि केवल एक ही मानसिक दायरे में रहना ठीक नहीं है। हमारे देश में मल्टीडिप्लीनरी को भुला दिया गया था। दुर्ग विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो एनपी दीक्षित ने कहा कि प्रकृति में अभी भी कई चीजें हैं जिस पर रिपोर्ट नहीं बनी है। नए विद्यार्थी अपने दिमाग को खुला रखें और अपने चारों तरफ की चीजों का अवलोकन करें।

बेहतर ज्ञान के लिए बहुभाषी होना जरूरी : सिंह

विवि में जियोफिजिक्स विषय पर व्याख्यान का आयोजन

नवभारत रिपोर्टर। जगदलपुर।

शमक विवि में मंगलवार को जियोफिजिक्स एंड पेट्रोफिजिक्स इन मिनरल इक्सपोलरेशन विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। भौतिकी अध्ययनशाला के इस कार्यक्रम में प्रमुख वक्ता रिटायर्ड चीफ जियोफिजिस्ट अशोक सिंह ने कहा कि विद्यार्थी एक विद्यार्थी नहीं होता बल्कि वे भविष्य होते हैं। आप सभी विभिन्न भाषा को सीखें। ह्यूमन हिस्ट्री के लिटलेचर विभिन्न भाषाओं में हैं। उन्हें जानने समझने के लिए आपको बहुभाषी होना जरूरी है।

कार्यक्रम में श्री सिंह ने आगे कहा कि आज कम्प्लीटनेस की कमी है। किसी वर्क को कम्प्लीटनेस से करना जरूरी है। ये कम्प्लीटनेस आपको मल्टीडिसिप्लीनरी ज्ञान से आएगी। श्री सिंह ने मैथेमेटिका ऑप्टिमाईजेशन के साथ धरती के नीचे के हिडन मिनरल क्षेत्र को पहचाने संबंधी कई जानकारी दी। श्री सिंह ने कहा कि समस्या और समाधान खोजने से ज्यादा संभावना क्या है को ढूंढना महत्वपूर्ण है। अपने स्वागत और आभार उद्‌बोधन में कुलसचिव डॉ. राजेश लालवानी ने कहा कि एनईपी 2020 आने के बाद अब विषयों की सीमा में बंधे रहने की बाध्यता नहीं है। सफलता से पहले कई असफलता हाथ लगती है पर इसे सकारात्मक तरीके से लें। कार्यक्रम का संचालन वर्षा पांडे और चंचल वर्मा ने किया। कार्यक्रम में डॉ समीर ठाकुर, अमितांशु शेखर झा, डॉ स्वप्ना गुप्ता, संजय कुमार पांडेय, डॉ. प्रिंस जैन, डॉ. कृष्णकुमार वर्मा, देवेंद्र यादव, सेमंत बघेल सहित अन्य उपस्थित थे।

मल्टीडिप्लीनरी भुला दिया गया

शमक विवि के कुलपति प्रो मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि मल्टी डिसिप्लीनरी में टीचिंग और रिसर्च इंटेशन दोनों शामिल हैं। प्रो श्रीवास्तव ने साइलोस का मायने समझाते हुए कहा कि केवल एक ही मानसिक दायरे में रहना ठीक नहीं है। हमारे देश में मल्टी डिप्लीनरी को भुला दिया गया था।

छग रजत जयंती महोत्सव कार्यक्रम आयोजित

जगदलपुर, 10 सितंबर (देशबन्धु)। छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना के रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में बुधवार को शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में विभिन्न अकादमिक स्पर्धाओं का आयोजन किया गया। कम्प्यूटर अनुप्रयोग अध्ययनशाला द्वारा आयोजित क्विज, भाषण एवं पैनल ग्रुप डिस्कशन स्पर्धा में करीब सौ विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। प्रतिभागी विद्यार्थियों ने बस्तर की संस्कृति, परंपरा, आधुनिकता, नए व्यवसाय, युवाओं की भागीदारी जैसे विविध विषयों पर अपनी स्वतंत्र अभिव्यक्ति दी। सर्वप्रथम छत्तीसगढ़ के अतीत और विकास के संदर्भ में वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान क्विज स्पर्धा का आयोजन किया गया। इसमें करीब 70 विद्यार्थियां ने हिस्सा लिया। वहीं भाषण स्पर्धा में तेरह युवाओं ने अपने ओजस्वी विचार रखे। विद्यार्थियों ने कहा कि हमें आधुनिकता और परंपरा के बीच सामंजस्य बनाकर चलना है। परंपराओं का

पालन जरूरी है तो आधुनिकता को भी दरकिनार करना ठीक नहीं होगा। एमसीए की छात्रा दामिनी साहू ने कहा कि परंपरा और आधुनिकता एक-दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं। हमें बस्तर की परंपराओं का सम्मान करते हुए आधुनिकता को अपनाना चाहिए। सभी युवा वक्ताओं ने बस्तर में स्टार्टअप और उद्यमिता के क्षेत्र में अपार संभावनाओं की बात कही। सभी ने उपब्धियों के साथ भविष्य की चुनौतियों

- **परंपराओं का सम्मान करते हुए आधुनिकता को अपनाएं**
- **अकादमिक स्पर्धाओं में खुलकर बोले विवि के विद्यार्थी**

की ओर भी ध्यान आकृष्ट कराया। युवाओं ने प्रेरणास्वरूप उदाहरण देते हुए बताया कि बस्तर के युवा कोशिश करें तो क्षेत्र में कई सफल स्टार्टअप प्रारंभ किए जा सकते हैं। तीसरी स्पर्धा में चार-चार विद्यार्थियों के दो पैनल ने बस्तर की परंपरा-संस्कृति में आधुनिकता का सामंजस्य विषय पर पक्ष-विपक्ष में विचार रखे। इस ग्रुप डिस्कशन स्पर्धा में दर्शक विद्यार्थियों ने रोचक और लोकप्रिय तर्कों पर तालियों से सराहना की। छत्तीसगढ़ रजत जयंती महोत्सव 2025 का यह कार्यक्रम संयोजक डॉ. तेज बहादुर चंद्र, सदस्य डिगेश्वर साहू, शिवम सोनवानी व राजेश्वर प्रसाद के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। स्पर्धा में संध्या गुप्ता, पायल, मेघा, राजकुमार, पुष्पा, संध्या ठाकुर, अंश, उर्वशी, दृष्टि, अभिषेक, एन गीता, जानवी, सोनूराम, जागृति, निखिल पटेल, निखिल कुमार सहित अन्य ने भाग लिया।

स्पर्धा : रजत जयंती पर विवि में अकादमिक स्पर्धाओं का हो रहा आयोजन

बस्तर के युवाओं के बोल...परंपराओं का सम्मान करते हुए आधुनिकता अपनाएं

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

विवि में स्पर्धा के दौरान अपनी बात रखते हुए एक छात्रा।

जगदलपुर . छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना के रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में बुधवार को शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में विभिन्न अकादमिक स्पर्धाओं का आयोजन किया गया। कम्प्यूटर अनुप्रयोग अध्ययनशाला द्वारा आयोजित क्विज, भाषण एवं पैनल ग्रुप डिस्कशन स्पर्धा में करीब सौ विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। प्रतिभागी विद्यार्थियों ने बस्तर की संस्कृति, परंपरा, आधुनिकता, नए व्यवसाय, युवाओं की भागीदारी जैसे विविध विषयों पर अपनी स्वतंत्र अभिव्यक्ति दी। छत्तीसगढ़ के अतीत और विकास के संदर्भ में वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान क्विज स्पर्धा का आयोजन किया गया। इसमें करीब 70 विद्यार्थियां ने हिस्सा लिया। वहीं भाषण स्पर्धा में तेरह युवाओं ने अपने ओजस्वी विचार रखे। विद्यार्थियों ने कहा कि हमें आधुनिकता और परंपरा के बीच सामंजस्य बनाकर चलना है। परंपराओं का पालन जरूरी है तो आधुनिकता को भी दरकिनार करना ठीक नहीं होगा। एमसीए की छात्रा दामिनी साहू ने कहा कि परंपरा और आधुनिकता एक-दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं। हमें बस्तर की परंपराओं का सम्मान करते हुए आधुनिकता को अपनाना चाहिए।

स्पर्धा में संध्या गुप्ता, पायल, मेघा, राजकुमार, पुष्पा, संध्या ठाकुर, अंश, उर्वशी, दृष्टि, अभिषेक, एन गीता, जानवी, सोनूराम, जागृति, निखिल पटेल, निखिल कुमार व अन्य थे।

उपलब्धि के साथ चुनौतियों पर भी विमर्श

सभी युवा वक्ताओं ने बस्तर में स्टार्टअप और उद्यमिता के क्षेत्र में अपार संभावनाओं की बात कही। सभी ने उपध्धियों के साथ भविष्य की चुनौतियों की ओर भी ध्यान आकृष्ट कराया। युवाओं ने प्रेरणास्वरूप उदाहरण देते हुए बताया कि बस्तर के युवा कोशिश करें तो क्षेत्र में कई सफल स्टार्टअप प्रारंभ किए जा सकते हैं। तीसरी स्पर्धा में चार-चार विद्यार्थियों के दो पैनल ने बस्तर की परंपरा-संस्कृति में आधुनिकता का सामंजस्य विषय पर पक्ष-विपक्ष में विचार रखे। इस गुरप डिस्कशन स्पर्धा में दर्शक विद्यार्थियों ने रोचक और लोकप्रिय तर्कों पर तालियों से सराहना की। छत्तीसगढ़ रजत जयंती महोत्सव 2025 का यह कार्यक्रम संयोजक डॉ. तेज बहादुर चंद्र, सदस्य डिगेश्वर साहू, शिवम सोनवानी व राजेश्वर प्रसाद के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया।

छग रजत जयंती महोत्सव कार्यक्रम आयोजित

जगदलपुर, 10 सितंबर (देशबन्धु)। छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना के रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में बुधवार को शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में विभिन्न अकादमिक स्पर्धाओं का आयोजन किया गया। कम्प्यूटर अनुप्रयोग अध्ययनशाला द्वारा आयोजित क्विज, भाषण एवं पैनल ग्रुप डिक्शन स्पर्धा में करीब सौ विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। प्रतिभागी विद्यार्थियों ने बस्तर की संस्कृति, परंपरा, आधुनिकता, नए व्यवसाय, युवाओं की भागीदारी जैसे विविध विषयों पर अपनी स्वतंत्र अभिव्यक्ति दी। सर्वप्रथम छत्तीसगढ़ के अतीत और विकास के संदर्भ में वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान क्विज स्पर्धा का आयोजन किया गया। इसमें करीब 70 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। वहीं भाषण स्पर्धा में तेरह युवाओं ने अपने ओजस्वी विचार रखे। विद्यार्थियों ने कहा कि हमें आधुनिकता और परंपरा के बीच सामंजस्य बनाकर चलना है। परंपराओं का

पालन जरूरी है तो आधुनिकता को भी दरकिनार करना ठीक नहीं होगा। एमसीए की छात्रा दामिनी साहू ने कहा कि परंपरा और आधुनिकता एक-दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं। हमें बस्तर की परंपराओं का

- **परंपराओं का सम्मान करते हुए आधुनिकता को अपनाएं**
- **अकादमिक स्पर्धाओं में खुलकर बोले विवि के विद्यार्थी**

सम्मान करते हुए आधुनिकता को अपनाना चाहिए। सभी युवा वक्ताओं ने बस्तर में स्टार्टअप और उद्यमिता के क्षेत्र में अपार संभावनाओं की बात कही। सभी ने उपब्धियों के साथ भविष्य की चुनौतियों की ओर भी ध्यान आकृष्ट कराया। युवाओं ने प्रेरणास्वरूप उदाहरण देते हुए बताया कि बस्तर के युवा कोशिश करें तो क्षेत्र में कई सफल स्टार्टअप प्रारंभ किए जा सकते हैं। तीसरी स्पर्धा में चार-चार विद्यार्थियों के दो पैनल ने बस्तर की परंपरा-संस्कृति में आधुनिकता का सामंजस्य विषय पर पक्ष-विपक्ष में विचार रखे। इस ग्रुप डिस्कशन स्पर्धा में दर्शक विद्यार्थियों ने रोचक और लोकप्रिय तर्कों पर तालियों से सराहना की। छत्तीसगढ़ रजत जयंती महोत्सव 2025 का यह कार्यक्रम संयोजक डॉ. तेज बहादुर चंद्र, सदस्य डिगेश्वर साहू, शिवम सोनवानी व राजेश्वर प्रसाद के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। स्पर्धा में संध्या गुप्ता, पायल, मेघा, राजकुमार, पुष्पा, संध्या ठाकुर, अंश, उर्वशी, दृष्टि, अभिषेक, एन गीता, जानवी, सोनूराम, जागृति, निखिल पटेल, निखिल कुमार सहित अन्य ने भाग लिया।

स्पर्धा : रजत जयंती पर विवि में अकादमिक स्पर्धाओं का हो रहा आयोजन

बस्तर के युवाओं के बोल...परंपराओं का सम्मान करते हुए आधुनिकता अपनाएं

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

विवि में स्पर्धा के दौरान अपनी बात रखते हुए एक छात्रा।

जगदलपुर . छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना के रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में बुधवार को शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में विभिन्न अकादमिक स्पर्धाओं का आयोजन किया गया। कम्प्यूटर अनुप्रयोग अध्ययनशाला द्वारा आयोजित क्विज, भाषण एवं पैनल ग्रुप डिस्कशन स्पर्धा में करीब सौ विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। प्रतिभागी विद्यार्थियों ने बस्तर की संस्कृति, परंपरा, आधुनिकता, नए व्यवसाय, युवाओं की भागीदारी जैसे विविध विषयों पर अपनी स्वतंत्र अभिव्यक्ति दी। छत्तीसगढ़ के अतीत और विकास के संदर्भ में वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान क्विज स्पर्धा का आयोजन किया गया। इसमें करीब 70 विद्यार्थियां ने हिस्सा लिया। वहीं भाषण स्पर्धा में तेरह युवाओं ने अपने ओजस्वी विचार रखे। विद्यार्थियों ने कहा कि हमें आधुनिकता और परंपरा के बीच सामंजस्य बनाकर चलना है। परंपराओं का पालन जरूरी है तो आधुनिकता को भी दरकिनार करना ठीक नहीं होगा। एमसीए की छात्रा दामिनी साहू ने कहा कि परंपरा और आधुनिकता एक-दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं। हमें बस्तर की परंपराओं का सम्मान करते हुए आधुनिकता को अपनाना चाहिए।

स्पर्धा में संध्या गुप्ता, पायल, मेघा, राजकुमार, पुष्पा, संध्या ठाकुर, अंश, उर्वशी, दृष्टि, अभिषेक, एन गीता, जानवी, सोनूराम, जागृति, निखिल पटेल, निखिल कुमार व अन्य थे।

उपलब्धि के साथ चुनौतियों पर भी विमर्श

सभी युवा वक्ताओं ने बस्तर में स्टार्टअप और उद्यमिता के क्षेत्र में अपार संभावनाओं की बात कही। सभी ने उपब्धियों के साथ भविष्य की चुनौतियों की ओर भी ध्यान आकृष्ट कराया। युवाओं ने प्रेरणास्वरूप उदाहरण देते हुए बताया कि बस्तर के युवा कोशिश करें तो क्षेत्र में कई सफल स्टार्टअप प्रारंभ किए जा सकते हैं। तीसरी स्पर्धा में चार-चार विद्यार्थियों के दो पैनल ने बस्तर की परंपरा-संस्कृति में आधुनिकता का सामंजस्य विषय पर पक्ष-विपक्ष में विचार रखे। इस गुरप डिस्कशन स्पर्धा में दर्शक विद्यार्थियों ने रोचक और लोकप्रिय तर्कों पर तालियों से सराहना की। छत्तीसगढ़ रजत जयंती महोत्सव 2025 का यह कार्यक्रम संयोजक डॉ. तेज बहादुर चंद्र, सदस्य डिगेश्वर साहू, शिवम सोनवानी व राजेश्वर प्रसाद के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया।

पुस्तक मेले में नवप्रवेशी स्टूडेंटस ने दिखाई रुचि

जगदलपुर। छग रजत जयंती महोत्सव 2025 के उपलक्ष्य में प्रदेश के अन्य संस्थानों की तरह बहुविषयक शिक्षा एवं अनुसंधान विवि (मेरु) शामक विवि में राज्य की उन्नति, इसकी सभ्यता, संस्कृति, स्टार्टअप, इनोवेशन इत्यादि को लेकर कई बौद्धिक व शैक्षणिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। शुक्रवार में विवि में आयोजित रजत जयंती महोत्सव 2025 में पुस्तक मेला का आयोजन किया गया। अकादमिक भवन में लगे इस मेले में विवि के वर्तमान व पूर्व विद्यार्थियों ने विभिन्न स्टॉल में लगे पुस्तकों के प्रति कई जानकारी प्राप्त की। विवि ग्रंथालय द्वारा लगे इस मेले में बड़े आकार में बने भारतीय संविधान की पुस्तक को प्रदर्शनी के लिए रखा गया।

दैनिक भास्कर
बस्तर भास्कर 13-09-2025

एलुमिनी मीट • कार्यक्रम में भूतपूर्व विद्यार्थी जुटे, भव्य बनते जा रहे विश्वविद्यालय की तारीफ की, आपस में यादें ताजा कर भावुक हुए

भूतपूर्व विद्यार्थी बोले - बीयू को देश का सबसे अच्छा विवि बनाएंगे

भास्कर न्यूज | जगदलपुर

जगदलपुर। एलुमिनी मीट में शामिल कालेज के पूर्व छात्र और अन्य लोग।

छत्तीसगढ़ रजत जयंती समारोह के उपलक्ष्य में गुरुवार को बस्तर विश्वविद्यालय में एलुमिनी सेल एवं पीएम उषा के द्वारा एलुमिनी मीट का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के करीब सौ पूर्व छात्र-छात्राओं ने पुनः अपने विश्वविद्यालय में आकर अपने अनुभव साझा किए।

बीएड के पूर्व छात्र अशोक ने कहा कि इस विवि ने शिक्षा के साथ गांव में लाइब्रेरी प्रारंभ करने जैसी समाजसेवा की भी सीख मिली। फॉरेस्ट्री एंड वाइल्ड लाईफ की छात्रा आकांक्षा ने कहा कि विवि अध्ययन के दौरान रिसर्च पर बहुत ध्यान दिया गया था। मन में वैज्ञानिकी का भाव आया। स्मृति पाढ़ी ने कहा कि विवि से जुड़ी ढेर सारी यादें अभी भी ताजा हैं। रोमा राय ने कहा कि फ्यूचर सभी विषयों में है। इसी तरह एलुमिनाई में डॉ सुनीता कोरी, मानव विज्ञान में नेट उत्तीर्ण पूर्व छात्रा सबाना बेगम, बीएड के पूर्व छात्र सूरज यादव, अनुभा डे विश्वास सहित अन्य ने विचार रखे। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि विश्वविद्यालय की पहचान विद्यार्थियों की योग्यता, उपलब्धियों और समाज में दिए गए उनके योगदानों से होती है। विश्वविद्यालय की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए श्रीवास्तव ने बताया कि यह छत्तीसगढ़ का एकमात्र मेरु विश्वविद्यालय है जहां वर्तमान में 29 विभाग एवं 44 अकादमिक कार्यक्रम संचालित हो रहे हैं। पूर्व विद्यार्थियों ने सीमित संसाधनों में शिक्षा अर्जित की है। अब यह विवि वृहद व्यवस्था के साथ श्रेष्ठ बनने की ओर अग्रसर है। कुलपति ने भूतपूर्व विद्यार्थियों से आग्रह किया कि वे विश्वविद्यालय की करिकुलम में सुधार को लेकर सुझाव दें तथा यदि किसी के पास स्टार्टअप आइडिया हो तो विश्वविद्यालय के आईएसफ एवं इनक्यूबेशन सेंटर से जुड़े। विवि उनका पूरा सहयोग करेगा। उन्होंने यह भी घोषणा की कि विवि का लाइब्रेरी एलुमिनी के लिए हमेशा उपलब्ध रहेगी और उनके लिए विशेष आई-कार्ड की व्यवस्था होगी, जिससे वे पुस्तकों का लाभ ले सकेंगे। साथ ही उन्होंने भविष्य में एलुमिनी सेंटर की स्थापना की भी जानकारी दी। कुलसचिव डॉ राजेश लालवानी ने कहा कि जब विश्वविद्यालय से पढ़े विद्यार्थी जीवन में ऊंचाइयां प्राप्त करते हैं। यह पूरे विश्वविद्यालय के लिए गर्व का विषय होता है। उन्होंने कहा कि जिस स्कूल और कॉलेज में जीवन और कैरियर की बुनियाद मजबूत की होती हैं वहां एलुमिनाई बनकर आने पर आनंद की सुखद अनुभूति होती है। कार्यक्रम संयोजक एवं प्राध्यापक डॉ स्वपन कुमार कोले ने कहा कि विश्वविद्यालय हमेशा शोध, नवाचार और समाज कल्याण के लिए तत्पर है। विद्यार्थियों के लिए समय-समय पर विशेष व्याख्यान और गतिविधियां आयोजित कर उन्हें नए अवसरों से जोड़ा जाता है। एलुमिनी मीट पूर्व और वर्तमान विद्यार्थियों को एक-दूसरे से जुड़ने व पुरानी स्मृतियों को फिर जीने का अवसर देता है। पीएम उषा समन्वयक प्रो शरद नेमा ने कार्यक्रम के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा कि एलुमिनी विश्वविद्यालय की ताकत होते हैं।

डॉ समीर ठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि एलुमिनी की सक्रिय भागीदारी ही विश्वविद्यालय की असली पूंजी है। उन्होंने सभी विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया।

युवाओं को सीख | **विवि में जॉब संबंधी ट्रेनिंग और कैरियर काउंसलिंग प्रोग्राम**

स्किल के लिए एनएटीएस का अप्रेंटिस ट्रेनिंग सबसे बेहतर

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

ट्रेनिंग और कैरियर काउंसलिंग प्रोग्राम के दौरान मौजूद एक्सपर्ट और विवि के छात्र।

जगदलपुर . राज्य स्थापना रजत महोत्सव के उपलक्ष्य से शुक्रवार को शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में जॉब ओरिएंटेड ट्रेनिंग और कैरियर काउंसलिंग प्रोग्राम का आयोजन किया गया। इसमें बोर्ड ऑफ अप्रेंटिसशिप एवं प्रमुख बैंकों के एक्सपर्ट ने विवि यूटीडी के फाईनल एवं पास आउट स्टूडेंट्स को एनएटीएस अप्रेंटिसशिप एवं करियर संबंधित कई टेक्निकल बातों की जानकारी दी। इस अवसर पर कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि किसी विषय से संबंधित सैद्धांतिक ज्ञान देने के साथ-साथ उससे जुड़े जॉब और कैरियर ओरिएंटेड जानकारी और प्रशिक्षण देना भी विवि का कार्य है। विवि की पूरी कोशिश है कि विद्यार्थियों को उनकी योग्यता, क्षमता के अनुसार उचित स्थान मिले। प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि आज शिक्षा के स्तर और जॉब के रिक्वायर्ड एबिलिटी में बहुत बड़ा गैप है। इस कारण पर्याप्त नौकरी नहीं मिल पा रही है। विवि में जॉब ओरिएंटेड इकोसिस्टम बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इससे विद्यार्थी रूचि लेकर पढ़ाई करेंगे। प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि ऑन जॉब ट्रेनिंग के लिए एनएटीएस नेशनल अप्रेंटिसशिप ट्रेनिंग स्कीम 2.0 का प्रशिक्षण जरूरी है। स्नातक उत्तीर्ण सभी युवाओं को एनएटीएस पोर्टल पर ऑनलाईन कर लेना चाहिए। एसबीआई के एचआर टॉम अतुल डंग डंग ने कहा कि बैंक में हर तरह के जॉब के अवसर हैं। आप रीजनिंग, इंग्लिश, एप्टीट्यूड, डाटा इंटरप्रेटेशन का नियमित प्रैक्टिस कर बैंक जॉब में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। बोर्ड आफ अपैरेंटिसशिप ट्रेनिंग के लायजन ऑफिसर सोनू उके ने अप्रैंटिसशिप एक्ट 1961 की जानकारी देते हुए कहा कि आईटीआई के साथ-साथ आज सारे स्नातक और डिप्लोमा उत्तीर्ण युवा अप्रेंटिसशिप प्रशिक्षण पा सकते हैं। सरकार ने अप्रेंटिसशिप इंटर्नशिप के तहत स्टायफंड के लिए कई प्रावधान किए हैं। श्री उके ने बताया कि आज एनएटीएस पोर्टल से छत्तीसगढ़ के 110 इंडस्ट्री व कंपनी जुड़े हैं। ये इंडस्ट्री हर तरह के जॉब दे रहे हैं। इसमें बस्तर के भी दो इंडस्ट्री हैं। स्किल सीखने के लिए एनएटीएस का अप्रेंटिसशिप ट्रेनिंग सबसे बेहतर विकल्प है। किसी भी विषय के विद्यार्थी स्नातक के बाद पांच वर्ष तक किसी भी इंडस्ट्री में साल या छह महीने एनएटीएस अपैरेंटिसशिप का ट्रेनिंग कर सकते हैं। उके ने युवा स्टूडेंट्स को ईमेल, मोबाईल नंबर को स्थायी रखने का सुझाव दिया।

विवि में जॉब संबंधी ट्रेनिंग एवं कैरियर काउंसलिंग प्रोग्राम

स्किल सीखने एनएटीएस का अप्रैंटिस ट्रेनिंग सबसे बेहतर: उके

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जगदलपुर

राज्य स्थापना के सिल्वर जुबली ईयर के उपलक्ष्य से शुक्रवार को शहीद महेंद्र कर्मा यूनिवर्सिटी में जॉब ओरिएंटेड ट्रेनिंग एवं कैरियर काउंसलिंग प्रोग्राम का आयोजन किया गया। इसमें बोर्ड ऑफअप्रैंटिसशिप एवं प्रमुख बैंकों के एक्सपर्ट ने विवि यूटीडी के फाईनल एवं पास आउट स्टूडेंट्स को एनएटीएस अप्रेंटिसशिप एवं करियर संबंधित कई टेक्निकल बातों की जानकारी दी।

इस अवसर पर कुलपति प्रो मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि किसी विषय से संबंधित सैद्धांतिक ज्ञान देने के साथ-साथ उससे जुड़े जॉब और कैरियर ओरिएंटेड जानकारी और प्रशिक्षण देना भी विवि का कार्य है। विवि की पूरी कोशिश है कि विद्यार्थियों को उनकी योग्यता,क्षमता के अनुसार उचित स्थान मिले। प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि आज शिक्षा के स्तर और जॉब के रिक्वायर्ड एबिलिटी में बहुत बड़ा गैप है। इस कारण पर्याप्त नौकरी नहीं मिल पा रही है। विवि में जॉब ओरिएंटेड इकोसिस्टम बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इससे विद्यार्थी रूचि लेकर पढ़ाई करेंगे। प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि ऑन जॉब ट्रेनिंग के लिए एनएटीएस(नेशनल अप्रैंटिसशिप ट्रेनिंग स्कीम) 2.0 का प्रशिक्षण जरूरी है। स्नातक उत्तीर्ण सभी युवाओं को एनएटीएस पोर्टल पर ऑनलाईन कर लेना चाहिए।

एसबीआई के एचआर अधिकारी टॉम अतुल डंग डंग ने कहा कि बैंक में हर तरह के जॉब के अवसर हैं। आप रीजनिंग,इंग्लिश, एप्टीट्यूड, डाटा इंटरप्रेटेशन का नियमित प्रैक्टिस कर बैंक जॉब में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। बोर्ड आफ अपैरंटिसशिप ट्रेनिंग के लायजन ऑफिसर सोनू उके ने अप्रैंटिसशिप एक्ट 1961 की जानकारी देते हुए कहा कि आईटीआई के साथ-साथ आज सारे स्नातक और डिप्लोमा उत्तीर्ण युवा अप्रैंटिंसशिप प्रशिक्षण पा सकते हैं। सरकार ने अप्रैंटिसशिप इंटर्नशिप के तहत स्टायफंड के लिए कई प्रावधान किए हैं। उके ने बताया कि आज एनएटीएस पोर्टल से छत्तीसगढ़ के 110 इंडस्ट्री व कंपनी जुड़े हैं। ये इंडस्ट्री हर तरह के जॉब दे रहे हैं।इसमें बस्तर के भी दो इंडस्ट्री हैं। स्किल सीखने के लिए एनएटीएस का अप्रैंटिसशिप ट्रेनिंग सबसे बेहतर विकल्प है। किसी भी विषय के विद्यार्थी स्नातक के बाद पांच वर्ष तक किसी भी इंडस्ट्री में साल या छह महीने एनएटीएस अपैरंटिसशिप का ट्रेनिंग कर सकते हैं। श्री उके ने युवा स्टूडेंट्स को ईमेल, मोबाईल नंबर को स्थायी रखने का सुझाव दिया।

बैंकिंग और लाइफ इंश्यूरेंस के क्षेत्र में अच्छा केरियर बना सकते : चिमनानी

एचडीएफसी सर्किल हेड कमल कुमार चिमनानी ने कहा कि आप बैंकिंग और लाईफ इंश्योरेंस के क्षेत्र में बहुत अच्छा कैरियर बना सकते हैं। इस फील्ड में जॉब की कोई कमी नहीं है। सेल्स और मार्केटिंग के क्षेत्र में भी महिलाएं सफल हो रही हैं। अब बैंक जॉब में जेंडर में अंतर कर नहीं देखा जा रहा है। इससे पहले अपने स्वागत उद्बोधन में प्रोग्राम कोर्डिनेटर प्रो स्वपन कुमार कोले ने कहा कि ऐसे आयोजन युवाओं के लिए रोजगार के क्षेत्र में संभावनाओं का द्वार खोलता है।

Shaheed Mahendra Karma Vishwavidyalaya, Bastar (C.G.)
One Day Lecture
On
ONE DAY LECTURE
TANGIBLE AND INTANGIBLE

प्रकृति में लाए जा रहे परिवर्तन का प्रभाव हमारे सांस्कृतिक विरासत पर पड़ता है : डॉ. मोहंती

जगदलपुर, 24 सितंबर (देशबन्धु)। शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में मानव विज्ञान एवं जनजातीय अध्ययनशाला में बुधवार को भारत की मूर्त और अमूर्त सांस्कृतिक विरासत विषय पर व्याख्यान का आयोजन हुआ। इस अवसर पर गंधाधर मेहर यूनिवर्सिटी, संबलपुर में मानव विज्ञान के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. बिभू कल्याण मोहंती एवं एंथ्रोपॉलिजिकल सर्वे ऑफ इंडिया जगदलपुर ईकाई के रीजनल डायरेक्टर डॉ पीयूष रंजन साहू उपस्थित थे।

मुख्य वक्ता डॉ बिभू ने कहा कि हमारी विरासत व सामाजिक व्यवस्था प्रकृति से जुड़ा है। प्रकृति में जो परिवर्तन लाए जा रहे हैं उसका प्रभाव हमारे सांस्कृतिक विरासत पर पड़ता है। डॉ. विभू ने कहा कि हम परिवर्तन को रोक नहीं सकते हैं। बस्तर के पूर्व जिलाधिकारी ब्रह्मदत्त शर्मा के कार्यों की चर्चा करते हुए डॉ. बिभू ने बताया कि पिछले 25-30 वर्षों में बस्तर बहुत बदल गया है। यहां की ढ़ेर सारी सांस्कृतिक विरासतें लुप्त होते जा रही हैं। फिर भी, बस्तर में कई ऐसे अनोखे सांस्कृतिक पहलू हैं जो युनेस्को की सूची के विरासत बनने की क्षमता रखते हैं। जब हम सांस्कृतिक पहलुओं का डॉक्यूमेंटेशन और प्रचार प्रसार करेंगे तभी यूनेस्को उसे स्वीकार करेगा। हम संस्कृति से संबंधित अच्छी फोटोग्राफी के साथ लोककला, गीत, संगीत, लोककथाओं का रिकार्डिंग कर संरक्षण में सहयोग कर सकते हैं। डॉ. बिभू ने बताया कि हम बारसूर जैसे स्थानों पर रहने वाले लोगों को सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागरूक कर देंगे तो वे उससे जुड़ाव महसूस कर उसकी सुरक्षा खुद करने आगे आएंगे। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. पीयूष रंजन साहू ने कहा कि हेरिटेज एक व्यापक शब्द है। प्रकृति या मानव द्वारा हो रहे परिवर्तन और समय के साथ नष्ट होने से पहले हमें अपने सांस्कृतिक विरासत का डॉक्यूमेंटेशन कर लेना जरूरी है। बेहतर भविष्य के लिए अतीत को जानने की व्यवस्था होनी चाहिए। डॉ. साहू ने कहा कि आज सस्टेनेबल डेवलपमेंट की तरह सस्टेनेबल कल्चर हेरिटेज की बात हो रही है। सांस्कृतिक विरासत का डॉक्यूमेंटेशन वे व्यक्ति बेहतर तरीके से कर सकते हैं जो उसी क्षेत्र व पर्यावरण में रहते हैं। डॉ. साहू ने बताया कि बस्तर की सांस्कृतिक विरासत ही भारत का सांस्कृतिक विरासत है। बस्तर क्षेत्र में न केवल पाषाण युग के साक्ष्य मिलते हैं बल्कि मानव विकास से संबंधित कई फुटप्रिंट होने के भी प्रमाण मिले हैं। बस्तर संभाग के कई शैलचित्रों का भी संरक्षण और डॉक्यूमेंटेशन करने की आवश्यकता है। स्वागत उद्बोधन में विभागाध्यक्ष प्रो. स्वपन कुमार कोले ने कहा कि सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण करना हम सबकी जिम्मेदारी है। हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित कर अगली पीढ़ी तक ले जाने का प्रयास करना चाहिए। अपने आभार वक्तव्य में सह प्राध्यापक डॉ. सुकृता तिर्की ने कहा कि संस्कृति सारे विषयों ने जुड़ा सबजेक्ट है। कांगेर घाटी सहित पूरे बस्तर की संस्कृति को यूनेस्को की स्थायी सूची में लाने के लिए हमें प्रयास करना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन बीएड अध्ययनशाला की अतिथि व्याख्याता डॉ. गायत्री सोनी ने किया। इस अवसर पर डॉ विनोद कुमार सोनी, अतिथि व्याख्याता डॉ शारदा देवांगन एवं मानवविज्ञान, शिक्षा एवं फॉरेस्ट्री अध्ययनशाला के करीब 80 विद्यार्थी उपस्थित रहे।

स्थापना दिवस: शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय की 18 वर्ष की यात्रा पर किया गया विमर्श

कुलपति बोले- प्रारंभिक संघर्ष को पारकर बड़े संस्थान की ओर बढ़ रहा महेंद्र कर्मा विवि

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

18वां स्थापना दिवस मनाने के लिए विवि में मौजूद कुलपति समेत अधिकारी-कर्मचारी।

जगदलपुर . बुधवार को शहीद महेंद्र विश्वविद्यालय, बस्तर का 18वां स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर विवि के प्रशासनिक भवन सभागार में आयोजित विचार, सुझाव, अनुभव व संस्मरण साझा कार्यक्रम में कुलपति प्रो. मनोज कुमार श्रीवास्तव सहित विवि के अधिकारी, प्राध्यापक एवं कर्मचारी उपस्थिति रहे। सभी ने बस्तर की संस्कृति के अनुसार मिल-जुलकर विवि के उत्तरोत्तर विकास के लिए काम करने का संकल्प दोहराया। इस अवसर पर कुलपति प्रो श्रीवास्तव ने कहा कि हम बड़े विवि की ओर बढ़ रहे हैं। यह विवि अपना प्रारंभिक समय और संघर्ष को पार कर लिया हैं। उच्च शिक्षा विभाग से नए विभागों की स्वीकृति लेकर न केवल उसे सफलतापूर्वक स्थापित किया है बल्कि मेरू विवि के मानदंडों को पूरा करने की ओर भी विवि अग्रसर है। विवि ने नए पाठ्यक्रमों के प्रारंभ करने के साथ-साथ बिल्डिंग जैसे इंफ्रास्ट्रक्चर, विभिन्न पदों पर नियुक्ति जैसे विभिन्न सीढ़ियों को छू लिया हैं। प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि आगे के सत्रों में विवि को व्यवस्थित और सुंदर बनाने के साथ इनरोलमेंट रेसियो बढ़ाने पर जोर दें।

नीड बेस्ट रिसर्च पर काम करना जरूरी

कुलपति ने कहा कि क्षेत्र के अनुसार नीड बेस्ड रिसर्च पर भी काम करना है। उन्होंने कहा कि विवि विचारों व नवीन ज्ञान को सृजित करने का केंद्र होता है। इसके लिए हमें पढने लिखने के बेहतर परिवेश के निर्माण पर ध्यान देना होगा। इस अवसर पर वरिष्ठ प्राध्यापक प्रो. शरद नेमा, वित्त अधिकारी श्रीनिवास रथ , डॉ. विनोद कुमार सोनी, डॉ. संजय कुमार डोंगरे, देवचरण गावड़े सहित अन्य अधिकारी व कर्मचारी ने भी अपने विचार सुझाव प्रस्तुत किए। अधिकारियों-कर्मचारियों ने कहा कि विवि नए-नए सोच के अधिकारियों के मार्गदर्शन में विकास किया है। कई चुनौतियों का सामना करने का फल हमें मिल रहा है।

02:30
शहीद महेन्द्र कर्मा विश्वविद्यालय, बस्तर
बहुविषयक शिक्षा एवं अनुसंधान विश्वविद्यालय (MERU)
AISHE - प्रशिक्षण कार्यशाला
07 अक्टूबर-2025, मंगलवार

विश्वविद्यालय में विशेष व्याख्यान का आयोजन

जगदलपुर, 07 अक्टूबर। शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में मंगलवार को विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कुलपति मनोज कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि साइंस, टेक्नोलॉजी एवं इंडस्ट्रिलाईजेशन के क्षेत्र में हमारे भारत देश ने उल्लेखनीय प्रगति की है पर पर्यावरण जैसे विभिन्न विषयों में विश्व की तरह कई अंतर्राष्ट्रीय संकटों से जूझ भी रहा है। हमें विज्ञान, तकनीक और सस्टेनेबल डेवलपमेंट के बीच बेहतर सामंजस्य बनाना होगा।

द रोल एंड चैलेंजेज ऑफ यूजिंग साइंस एंड टेक्नोलॉजी इन एचिविंग एसडीजीएस विषय पर अपने उद्बोधन में एनआईटी रायपुर के निदेशक डॉ. एनवी रमना राव सस्टेनेबल डवलपमेंट के 17 गोल की विस्तृत जानकारी दी। स्ट्रेटेजीज फॉर ओवरकमिंग स्ट्रेस एंड ऐनेक्जाइटी ए पाथ टू ए हैपियर लाईफ विषय पर एनआईटी रायपुर में बीओजी अध्यक्ष डॉ. सुरेश काशीनाथ हावरे ने कहा कि आज करीब नब्बे फीसद लोग तनाव की जिंदगी जी रहे हैं। सभी लोग कम्प्टीशन और कम्पेरीजन के अतिरेक में फंसकर तनाव और चिंता में हैं। जीवन में चिंता और तनाव दूर करने के लिए खानपान, व्यायाम और नींद पर ध्यान देना जरूरी है। डॉ. हावरे ने बताया कि हम सभी व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक एवं कार्यस्थल पर संघर्ष करते रहते हैं। यदि जीवन में चिंता और तनाव नहीं होंगे तभी हम सभी स्तर पर बेहतर कार्य कर पाएंगे। हमें वर्तमान में और कृतज्ञता के साथ जीने का प्रयास करना चाहिए। संचालन डॉ. कुश कुमार नायक ने किया। प्रो. एमएस मिश्रा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर वरिष्ठ प्राध्यापक प्रो. शरद नेमा, डॉ. विनोद कुमार सोनी, डॉ अनुज कुमार शुक्ला सहित अन्य उपस्थित थे।

एडवांस रिसर्च और स्टार्टअप जैसे विषयों पर की गई चर्चा

शमक विवि में पहली बार एकेडमिक प्लानिंग की बैठक

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

जगदलपुर. शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में सोमवार को एकेडमिक प्लानिंग एंड इवैल्यूएशन बोर्ड की बैठक आयोजित की गई। विवि में पहली बार हुई इस बैठक में विकास संबंधी विभिन्न विषयों और कार्ययोजनाओं पर विस्तृत चर्चा की गई। इस दौरान शोध छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान करने, पेटेंट के लिए राशि उपलब्ध कराने, बस्तर दशहरा एवं अन्य क्षेत्रीय संस्कृति पर शोध करने, एडवांस्ड रिसर्च सेंटर बनाने, अधिक से अधिक छात्र-छात्राओं को स्टार्टअप से जोडने, एनआईआरएफ रैंकिंग के लिए प्रयास करने, विभिन्न शैक्षणिक कार्यों में गुणवत्ता बढ़ाने, विश्वविद्यालय परिसर के लिए और जमीन की व्यवस्था करने जैसे कई आवश्यक विषयों पर चर्चा की गई। इस संबंध में कार्य योजना बनाकर क्रियान्वयन करने को लेकर भी चर्चा की गई। विश्वविद्यालय को 12बी में लाने को लेकर आवश्यक कदम उठाने पर भी बातचीत की गई। इस अवसर पर विवि के कुलपति प्रो मनोज कुमार श्रीवास्तव, कुलसचिव डॉ राजेश लालवानी, माननीय राज्यपाल के प्रतिनिधि महेंद्रकांत संगानी, जयराम दास सहित विद्या संबंधी योजना एवं मूल्यांकन बोर्ड के अन्य सम्मानीय सदस्य उपस्थित थे। विवि में पहली बार हुई बैठक में सभी सदस्यों का विश्वविद्यालय प्रबंधन द्वारा स्वागत अभिनंदन किया गया।

विद्या संबंधी योजना तथा मूल्यांकन बोर्ड की प्रथम बैठक

विवि के शैक्षिक, संरचनात्मक, अनुसंधानात्मक विकास पर सटीक कार्ययोजना बनाने पर चर्चा

विश्वविद्यालय में मूल्यांकन बोर्ड की प्रथम बैठक हुई

जगदलपुर @ पत्रिका . शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में विद्या संबंधी योजना तथा मूल्यांकन बोर्ड की प्रथम बैठक सोमवार को हुई। इस बैठक में विश्वविद्यालय प्रबंधन सहित कुलाधिपति के द्वारा नामित सदस्य सम्मिलित हुए थे। बैठक की अध्यक्षता कुलपति मनोज कुमार श्रीवास्तव ने की। इस अवसर पर कुलसचिव, अपर संचालक उच्च शिक्षा बस्तर संभाग,विभागाध्यक्ष सदस्य, प्राध्यापक सदस्य मौजूद रहे।

इस अवसर पर सदस्य जयराम दास ने विश्वविद्यालय के शैक्षिक, संरचनात्मक एवं अनुसंधानात्मक विकास पर कार्ययोजना तैयार करने छात्रों के लिए मूलभूत सुविधाओं को विकसित करने, रोजगार के अवसर सृजित करने हेतु लक्ष्य, लाइब्रेरी में एनईपी के तहत बुक्स की उपलब्धता, बी- 12 की मान्यता हासिल करने हेतु विशेष प्रयास पर बल दिया। नेक की ग्रेडिंग में सुधार करने, नये भवन निर्माण की गुणवत्ता सुनिश्चित करने, परिसर की साफ- सफाई पर सुझाव दिए। विश्व विद्यालय की वेबसाइट के अपग्रेडेशन, स्वीकृत पदों की भर्ती प्रक्रिया शीघ्र आरंभ करने, शैक्षिक गुणवत्ता, शोध कार्य में सुधार लाने हेतु सभी विभागों में राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस आयोजित करने, भविष्य में विश्वविद्यालय के विकास के लिये 200 एकड़ शासकीय भूमि अर्जन की प्रक्रिया प्रारंभ करने जैसे अन्य महत्वपूर्ण विषयों को बोर्ड के समक्ष रखा। देश का अग्रणी विश्वविद्यालय के रूप स्थापित हो इसलिए बस्तर जनजाति बहुल क्षेत्र है यंहा जनजाति परंपराओं सभ्यता संस्कृति के संरक्षण एवं शोध कार्य हेतु जनजाति शोध संस्थान की स्थापना भी किया जाना चाहिए।

सेमीनार : लोक विज्ञान अध्ययन केंद्र की संकल्पना पर भी हुई चर्चा

भारतीय विज्ञान सम्मेलन में भाग लेंगे विवि के विद्यार्थी

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

जगदलपुर. शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय में "लोक विज्ञान अध्ययन केंद्र" की स्थापना संबंधी संकल्पना पर विचार-विमर्श के लिए मंगलवार को विशेष सत्र आयोजित किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. एम के श्रीवास्तव, विज्ञान भारती मध्य क्षेत्र के संगठन मंत्री विवस्वान और महासचिव वरा प्रसाद कोला उपस्थित थे। सत्र के दौरान विद्यार्थियों को दिसंबर माह में तिरुपति में आयोजित होने वाले 7वें भारतीय विज्ञान सम्मेलन की विस्तृत जानकारी भी प्रदान की गई।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता कुलपति प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि आधुनिक एवं भारतीय ज्ञान का अध्ययन किया जाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि हमारे प्राचीन ज्ञान के पीछे गहन दर्शन निहित है, जिसे समझना आज के जरूरी हैं। प्रो. श्रीवास्तव ने बताया कि युवा होलिस्टिक दृष्टिकोण से विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करते हैं, तो वे किसी भी समस्या का समाधान निकालने में अधिक सक्षम होते हैं। यूजीसी ने सामान्य शिक्षा के माध्यम से समग्र दृष्टिकोण पर विशेष बल दिया है। भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़े अनेक विषयों पर शोध लंबित हैं, जिसके कारण पारंपरिक ज्ञान का वैज्ञानिक औचित्य सिद्ध करने में पीछे रह जाते हैं।

जगदलपुर. विचार- विमर्श की शृंखला को संबोधित करते कुलपति।

स्वदेशी का हो प्रचार

वरा प्रसाद कोला ने कहा कि विज्ञान उन्नति का आधार है। स्थानीय विज्ञान को विश्व स्तर तक पहुंचाने प्रयास होना चाहिए। विज्ञान भारती द्वारा स्वदेशी विज्ञान आंदोलन को जन-जन तक पहुंचाने का अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि दिसंबर के अंतिम सप्ताह में आयोजित होने वाले भारतीय विज्ञान सम्मेलन में विश्वविद्यालय के स्नातक, स्नातकोत्तर एवं शोधार्थियों के लिए भागीदारी की विशेष व्यवस्था की गई है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कुश कुमार नायक ने किया।

कार्यशाला | स्टार्टअप आइडियाज को लेकर किया गया मार्गदर्शन

बस्तर विवि ने आइडियाथॉन पर युवाओं को किया प्रेरित

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

जगदलपुर . छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना के रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इसी तारतम्य में मंगलवार को विवि के इन्क्यूबेशन एवं स्टार्टअप फाउंडेशन एवं कांकेर जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र की ओर से भानुप्रपतापदेव शासकीय पीजी कॉलेज कांकेर में छत्तीसगढ़ आइडियाथॉन 2025 संबंधी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कॉलेज के प्राचार्य डॉ. सीआर पटेल एवं डीटीआईसी के महाप्रबंधक टंकेश्वर देवांगन की उपस्थिति में युवाओं को नवाचार, उद्यमिता एवं आत्मनिर्भरता की दिशा में प्रेरित करने संबंधी एवं छत्तीसगढ़ आईडियाथॉन 2025 में भागीदारी प्रक्रिया की जानकारी दी गई। देवांगन ने कहा कि युवा अपने दैनिक जीवन की समस्याओं का समाधान खोजते हुए उनमें नवाचार के माध्यम से स्टार्टअप प्रारंभ कर सकते हैं। शासन द्वारा प्रारंभ की गई 'स्टार्टअप छत्तीसगढ़' की पहल युवाओं को अपने अभिनव विचारों को साकार करने का मंच प्रदान करती है। कार्यशाला में बतौर रिसोर्स पर्सन विवि में बॉयोटेक अध्ययनशाला के सहायक प्राध्यापक डॉ. नीरज कुमार वर्मा ने विद्यार्थियों को स्टार्टअप नवाचार प्रवर्तन एवं स्थानीय संसाधनों पर आधारित उद्यमिता के महत्व से अवगत कराया। डॉ. वर्मा ने इस आइडियाथॉन की पंजीयन प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी देते हुए इसमें अधिक से अधिक विद्यार्थियों को भागीदारी के लिए प्रेरित किया। डॉ वर्मा ने बताया कि नवाचार व उद्यमिता के क्षेत्र में रचनात्मक एवं नए विचारों को प्रोत्साहित करने का यह आइडियाथॉन युवाओं को एक नई पहचान देगा। चयनित युवाओं को 51 हजार तक ईनाम के साथ राज्योत्सव 2025 में सम्मानित किया जाएगा। संभावित स्टार्टअप को लेकर अपने विचार भी रखे। आयोजन में स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम आदर्श महाविद्यालय, कांकेर के प्राचार्य, आईटीआई, विवि में माइक्रो बायोलॉजी के अतिथि व्याख्याता डॉ. कृष्ण कुमार वर्मा एवं कांकेर जिले के विभिन्न कॉलेजों के फैकल्टी व छात्र-छात्राएं उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अलका केरकेट्टा ने किया।

PRESERVE HUMAN VALUES

SHAHEED MAHENDRA KARMA VISHWAVIDYALAYA, BASTAR

शहीद महेन्द्र कर्मा विश्वविद्यालय, बस्तर

उतिष्ठत जाग्रत प्राप्यवरान् निवोधत

तारीख– 21 जुलाई 2026 मार्गदर्शक व विभागाध्यक्ष – डॉ. विनोद कुमार सोनी

संकलन कर्ता– निरंजन कुमार